भूमिका

भारत की पारंपरिक लोकनाट्य शैलियों में मालवा (मध्यप्रदेश) के लोकनाट्यों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। मालवा के लोकनाट्य(खेलों) की जन्म भूमि उज्जैन(उज्जयिनी) है, और प्रसार क्षेत्र मालवा। मालवा चंबल, बेतवा और नर्मदा नदियों के बीच बसा है। इसके अंतर्गत उज्जैन, इंदौर, धार, रतलाम, मंदसौर, शाजपुर, राजगढ़, देवास और सीहोर जिले आते हैं। इसके अतिरिक्त गुना, विदिशा, भोपाल और होशंगाबाद जिले के कुछ भाग भी मालवा से जुड़े हुए हैं। मालवा का मुख्य लोकनाट्य माच है।मालवा में और भी कई लोकनाट्य रूप हैं जो मालवा में तो प्रचलित है मगर मालवा के बहार उनका कोई अस्तित्व नहीं हैं।

मालवा के बारे में एक कहावत प्रचलित है.....

"मालव मटी, धीर गंभीर"

"डग-डग रोटी, पग-पग नीर"

जैसे– ढाराढारीके खेल, गरबा-उत्सव, तुर्राकलंगी, नकल और स्वांग, चतुर्भाणी, हाजरात विधा, गम्मत, खड़ी सत्ताजी, देवधर्मी, संज्जामाई, गणगौर आदि। लेंकिन मालवा का प्रतिनिधित्व माच करता है। यह लोकनाट्य विधा एक अखाड़ा विधा है, और माच की मंडली को अखाड़ा कहा जाता है। प्रायः मालवा में मण्डलीयों के बिच माच के खेलों की प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन गर्मी के मौसम होता रहता हैं। इस लोकनाट्य विधा में मण्डली के प्रथम व्यक्ति को मुखिया, ख़लीफा और गुरु के नाम से पुकारा जाता है। अखाड़े के गुरु की मृत्यु के उपरान्त अखाड़े का नेतृत्व अखाड़े के सबसे बड़े व्यक्ति या गुरु के बेटे को करना होता है। लोकनाट्य माच में गादी प्रथा का प्रचलन है। इस प्रथा के अनुसार यदि गुरु की मृत्यु

हो जाती है तो उनके बाद जिसे भी अखाड़े का नया मुखिया/ ख़लीफा या गुरु नियुक्त किया जाता है उसकी गादी पूजा करवाई जाती है। मण्डली के सभी लोग नियुक्त किये गये नये गुरु को रोली कुमकुम का तिलक लगाकर पगड़ी बंधवाकर उसे गुरु गादी पर बिठाते है और अपना नया गुरु स्वीकार करते है। मालवा के लोकनाट्यों की पृष्टभूमि में माच अपने आपमें बहुत ही समृद्ध है। क्योंकि माच के खेलों में मालवा के अन्य लोककला रूपों का स्वरूप देखा जा सकता है।

माच मंच का तद्भव रूप ही नहीं एक रुढ़ शब्द है। माच अर्थात् ऊँचे और खुले मंच पर अभिनीत की जाने वाली नाट्य प्रस्तुतियाँ। माच की नाट्य प्रस्तुतियों को खेल कहते हैं और अभिनय को खेलना। माच के आदि प्रणेता भागसीपुरा वाले गोपालगुरु और जयसिंहपुरा वाले बालमुकुंद गुरु है। गुरु बालमुकुंद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने माच के 16 नाटकों की रचना की, जिसमें से10 का प्रकाशित हो चुके हैं। वे कुशल अभिनेता, गायक, और निर्देशक थे। माच के खेलों में मुख्य पात्र की भूमिका वे स्वयं निभाते थे। गुरू बालमुकुंद ने अपने तांत्रिक मित्र सुखराम यति और मुकुन्दराम सेठ के सहयोग से माच के खेलों की ऐसी धूम मचा दी कि उज्जैन, रतलाम, मन्दसौर और शाजापुर आदि शहरों और अनेक गाँवों में भी माच मंडलियां बन गई थी। अंतिम माच गुरुओं मे सिद्धेश्वर सेन गुरु सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रतिभा सम्पन्न माचकार रहे। जिन्होंने माच के 25 खेलों की रचना की और इन्हें संगीत नाटक अकादमी अवार्ड भी प्राप्त है।

माच खुले रंगमंच की शैली है। इसलिये माच के खेल प्रायः गर्मी के मौसम में मालवा के शहरों और गाँवों में आयोजित किये जाते हैं। यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी पनपती रही है। माच की ढ़ोलक पर ठेका थाप कहरवा चार चर दून और अद्दा आदि खूब चलते हैं। माच के खेल रात्रि के प्रथम प्रहर से प्रारंभ होकर अंतिम प्रहर तक चलते हैं। मालवी लोकसंगीत के समावेश

से माच का सांगीतिक स्वरूप विरल और विशिष्ट है। माच के खेलों में मालवा का लोक जीवन प्रतिबिंबित होता है। यद्यपि माचकारों ने धार्मिक पौराणिक और सामाजिक कथानकों पर अनेक खेलों की रचना की है। लोकनाट्य माच की समूचे मालवा में मंडलियाँ/अखाड़े विद्यमान हैं। लेकिन वर्तमान समय में इस कला रूप के कुछ अखाड़े ही अस्तित्व में हैं, बाकी अधिकांश अखाड़े अस्तित्वहीन हैं। परन्तु जो अखाड़े अब अस्तित्व में नहीं उन अखाड़ों के कई कलाकार आज भी मौजूद है। माच के ऐसे कई अखाड़े थे जो अपने समय में माच के खेलों के कारण मालवा ही नहीं मालवा के बाहर भी माच के खेलों की धूम मचा चुके थे, अब वहाँ सभी अखाड़े समाप्त हो चुके है या साल में एक दो प्रदार्शन मात्र ही कर पाते है।

माच की आधुनिक कृतियों में सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर भी नये-नये खेल रचे गए हैं। भूदान आंदोलन पर आधारित धरती को दानऔर नवनिर्माण विषय उगता सूरजतथा परिवार नियोजन की पृष्ठभूमि पर आधारित भगवान की देन जैसी माच कृतियां इस बात का प्रमाण हैं कि मालवा का यह लोकनाट्य समय के साथ कदम-कदम मिलाकर चलता रहा है।मालवा का माच रंगकर्म की चुनौतियों और प्रतिस्पर्धाओं के बीच पनपी एक स्वतंत्र लोकनाट्य शैली है। लगभग 250 वर्षो से अधिक समय से प्रचलित मालवा के इस लोकनाट्य पर नए नए प्रयोग होते रहे हैं। और उसके परिणाम स्वरूप माच कई पीढ़ियों तक लोक जीवन में आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

उपरोक्त तथ्यों का अध्ययन जब मैंने किया तब मुझे लगा की माच जैसे लोक नाट्य को मुख्यधारा में लाने के कार्य में मै भी अपनी सहभागिता इस शोध के माध्यम से करना चाहता हूँ जैसा की मेरा विषय है इसके अनुरूप मैने अन्य लोक नाट्यों की पृष्ठभूमि अध्ययन करते हुए उसमे माच की भूमिका को स्पष्ट करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। क्यूँकि मालवा में जो अन्य लोक नाट्य या लोक कलाएँ मौजूद हैं उन सभी का मिश्रण ही माच में देखा जा

सकता है पर इन सब के बावजूद माच की अपनी भी एक शैली अपनी एक विशेषता है जिसका अध्ययन और विश्लेष्ण प्रस्तुत शोध में किया गया है।